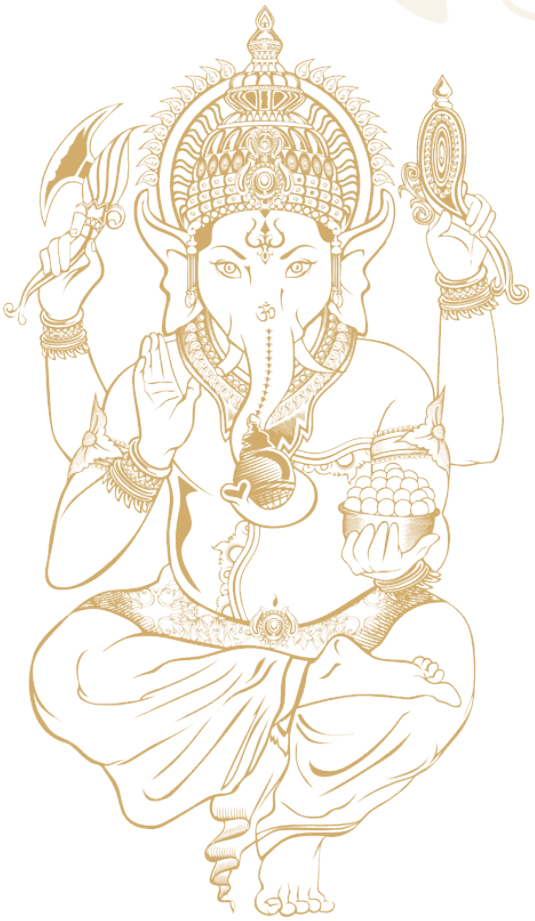

Daughter of umang

13 Dec 2025

12:59 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120717001**

तिथि 13/12/2025 **समय** 00:59:00 **वार** शनिवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:15
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	06:04:51 घं
वेलान्तर	00:05:48 घं
सूर्योदय	07:04:41 घं
सूर्यास्त	17:25:16 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	9
नक्षत्र	उ०फाल्गुनी
योग	आयुष्मान
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पी-पिंगला
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

सूर्य 1वर्ष 1मा 10दि

सूर्य

13/12/2025
23/01/2027

00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
13/12/2025
केतु 23/01/2026
शुक्र 23/01/2027

योगिनी

सिद्धा 1वर्ष 3मा 17दि

सिद्धा

13/12/2025
01/04/2027

00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
00/00/0000
13/12/2025
भद्रिका 29/01/2026
उल्का 01/04/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:51:02	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	बुध	---	0:00			
सूर्य			26:48:24	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	गुरु	मित्र राशि	0.86	अमात्य	पितृ	वध
चंद्र			07:31:42	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	केतु	मित्र राशि	1.32	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	03:53:40	धनु	मूल	2	केतु	चंद्र	मित्र राशि	1.19	ज्ञाति	भ्रातृ	मित्र
बुध			06:51:41	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	बुध	सम राशि	1.03	पुत्र	ज्ञाति	साधक
गुरु	व		29:21:56	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि	1.23	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र		अ	20:50:04	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	शुक्र	सम राशि	1.11	भ्रातृ	कलत्र	वध
शनि			01:07:46	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.35	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		18:50:59	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		18:50:59	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

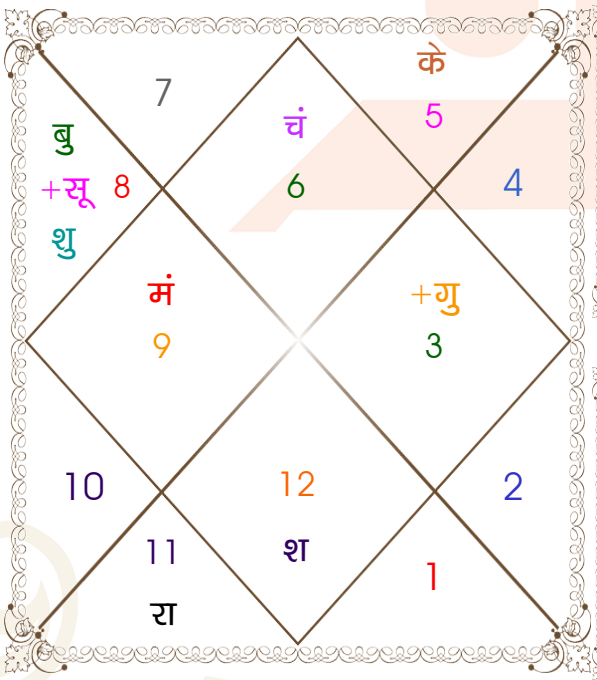

चन्द्र कुंडली

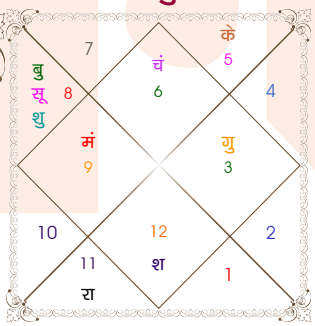

नवमांश कुंडली

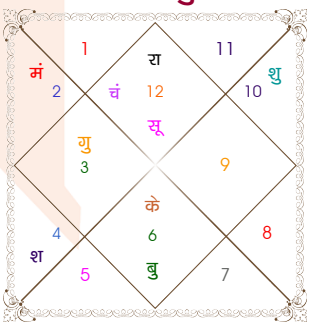

सर्वाष्टकवर्ग

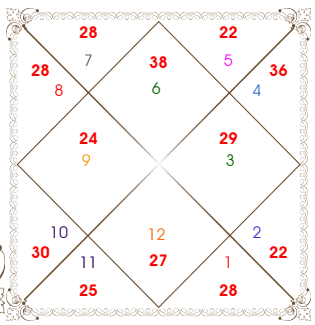

दशमांश कुंडली

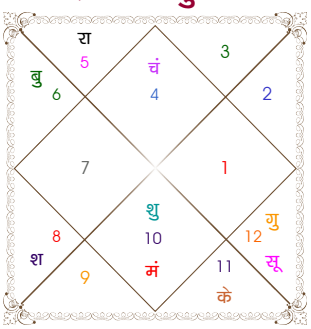

नक्षत्रफल

आप उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि गौ, वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म का प्रारम्भ "पि" या "पी" अक्षर से शुरू होगा ।

दया एवं करूणा के भाव से आप हमेशा पूर्ण रहेंगी तथा दीनदुखियों के प्रति अपनी इस भावना का समयानुसार प्रदर्शन करती रहेंगी । साथ ही दानशीलता की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा समाज से आपको पूर्ण सम्मान तथा यश प्राप्त होगा। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा स्वबुद्धिबल से कार्यो में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आप राज्य या सेना में भी किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित कर सकती हैं। आपमें धैर्य का भाव पूर्ण रूप से रहेगा तथा आपके समस्त कार्य धैर्यपूर्वक तथा सोचविचार सम्पन्न होंगे। साथ ही अन्य सामाजिक जनों से आपके मधुर संबंध रहेंगे।

दाता दयालु सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपते प्रधानः।
धीरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, शीलवान, कीर्तिवान राजमंत्री, स्वभाव से कोमल तथा धैर्यधारण करने वाला होता है।

आप अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में नाना प्रकार के भौतिक एवं सांसारिक सुखों का प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगी तथा समाज में पूर्ण सम्मानित एवं प्रतिष्ठित रहेंगी। आप लोगों द्वारा उपकृत होने पर उनके उपकार को शिरोधार्य करेंगी। साथ ही आप समस्त अच्छे गुणों से युक्त रहेगी तथा विदुषी भी होंगी ।

भोगी चोत्तरफाल्गुनीभजनितो कृतज्ञः सुधीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक भोगी सम्माननीय, कृतज्ञ तथा विद्वान होता है।

समाज में सभी लोग आप से प्रेम एवं स्नेह का भाव रखेंगे क्योंकि आप सभी वर्गो के हितकार्यो के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी एवं आवश्यकतानुसार अपना तन, मन, धन से सहयोग अर्पण भी करती रहेंगी। साथ ही आप विद्या द्वारा परिश्रम से धनार्जन कर के अपनी जीविका चलाएंगी तथा विभिन्न प्रकार के सुखों से सर्वदा युक्त रहेंगी ।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभागद्वितीयफाल्गुन्यां।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्या से धन प्राप्त करने वाला, भोगी तथा सुखी होता है।

आप का स्वभाव सहनशील रहेगा तथा दुःख एवं सुख का आप समान रूप से अनुभव करेंगी। दुःख में अधिक दुःख तथा सुख में अधिक प्रसन्नता करना आपकी प्रकृति के विरूद्ध होगी। साथ ही साहस एवं धैर्य की प्रबलता भी आप में पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगी तथा आपके समस्त कार्य साहस युक्त कार्य होगे। आप दूसरे लोगों को भी अच्छी लगनेवाली प्रिय एवं मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगी साथ ही निशाने बाजी की कला में भी आप पूर्ण निपुण रहेंगी। आप में एक महान साहसी के लक्षण विद्यमान रहेंगे तथा समाज में आप का व्यवहार अत्यन्त ही मधुर रहेगा।

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थ पण्डितः।
उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सहनशील वीर तथा मधुर बोलने वाला, धनुष बाण विद्या में निपुण, महायोद्धा तथा सर्वसाधारण का प्रिय होता है।

आप एक सयंमी महिला होंगी तथा इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से सयंम रखने में सफल रहेंगी। मन से आप हमेशा शान्त एवं स्थिर रहेंगी तथा चंचलता का सर्वथा अभाव रहेगा। साथ ही अपनी बुद्धि चातुर्य से आप मान एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी ।

दान्तः शान्तो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदस्य पारगः।
उत्तराफाल्गुनिजातो महाबुद्धिर्जनः प्रियः।।
जातकदीपिका

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक इन्द्रियों को वश में करने वाला, शान्त स्वभाव से युक्त, मधुर बोलने वाला, धनुर्वेद में पारंगत, महान बुद्धिमान तथा जनता का प्रिय होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं

वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा शरीर के अन्य भाग नाक, कान, दान्त तथा मुख मडंल सुन्दर एवं दर्शनीय होंगे। विविध शास्त्रों का आपको ज्ञान रहेगा तथा कई धार्मिक संस्थाओं की आप संचालिका या अध्यक्षा आदि उच्च पदों को सुशोभित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपकी धार्मिक वृति रहेगी तथा नियम पूर्वक धर्म का पालन करेंगी। साथ ही आप अत्यन्त प्रिय एवं मधुर वाणी बोलेगी जिससे सामाजिक जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आप हमेशा सत्य का अनुसरण करेंगी तथा शुद्धता का विशेष ध्यान रखेंगी। आप अपने सांसारिक कार्यो को अत्यन्त दक्षता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही आप के मन में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा इसके लिए तन, मन, धन से सहयोग अर्पण करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगी। समाज में सभी जीव एवं प्राणियों के प्रति आपके मन में पूर्ण करूणा का भाव विद्यमान रहेगा। आप देखने में अत्यन्त दर्शनीय तथा आकर्षक रहेंगी तथा समस्त सुखों से युक्त जीवन व्यतीत करेंगी। संतति संख्या में आप की पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियों की संख्या अधिक मात्रा में रहेगी ।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णो।
विद्वानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप आलस्य युक्त लज्जामयी दृष्टि से गमन करने में रूचिशील रहेंगी तथा आपके स्कन्ध तथा भुजाएं शिथिलता से युक्त रहेंगी। आप में समस्त सुखों का उपभोग करने वाली महिला होंगी। शरीर में कोमलता की अधिकता रहेगी तथा कई कला एवं विद्याओं के विषय में भी आपको ज्ञान रहेगा। इसके अतिरिक्त शास्त्रों के प्रति भी आप श्रद्धा रखेगी एवं प्रयत्नपूर्वक तत्व ज्ञान को प्राप्त करेंगी। साथ ही आप किसी व्यक्ति, संबंधी या मित्र के धन तथा मकान का अपने जीवन में उपयोग करने वाली होंगी। आप देश विदेश भ्रमण करने के लिए उत्सुक रहेंगी तथा इसके लिए आपको अवसर भी प्राप्त होंगे।

व्रीळामंथरचारूवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप अपनी विभिन्न प्रकार की हास्य पूर्ण मुद्राओं तथा कियाओं के द्वारा अन्य जनों को आकर्षित करने में सफल रहेंगी तथा वे आपसे हमेशा प्रसन्न रहेंगे। आपका स्वभाव अत्यन्त सहनशील छलकपटहीन तथा सुशीलता से सम्पन्न रहेगा। आप की कोशिश हमेशा अच्छे कार्यो

को करने के लिए रहेगी। साथ ही सौभाग्य हमेशा आपका सहायक होगा तथा जीवन में कई महत्वपूर्ण सफलताएँ भाग्यबल से ही प्राप्त होगी।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि हमेशा निर्मलता से युक्त रहेगी किसी प्रकार का छल उसमें नहीं रहेगा। लेखन कार्य के प्रति आपकी प्रारम्भ से ही रूचि रहेगी तथा कविता सृजन में सफलता प्राप्त कर सकेगी। हृदय से हमेशा शान्त रहेंगी किसी भी प्रकार चंचलता का आप में अभाव रहेगा। परन्तु नेत्रकष्ट से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेगी। साथ ही गुरूजनों की भलाई के लिए आप क्रियाशील रहेंगी तथा उन्हे पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेगी ।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

विलासिता के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा भौतिक सुख संसाधनों पर उनमुक्त भाव से व्यय करके उनका सुख पूर्वक उपभोग करेंगी। सज्जनों तथा विद्वानों के प्रति आपके मन में विशेष सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा ये लोग भी आपसे पूर्ण रूप से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही दानशीलता के सद्गुणों से भी आप युक्त रहेंगी। वैदिक धर्म के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी तथा यत्न पूर्वक उसका जीवन में पालन करेंगी। समाज के सभी लोगों के प्रति आपके चित्त में प्रेम एवं स्नेह का भाव जागृत रहेगा तथा समाज में पूर्ण रूप से लोकप्रियता प्राप्त करेगी। संगीत एवं अभिनय के प्रति आपकी गहन रूचि रहेगी तथा आजीवन इनसे आपका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंध बना रहेग।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप की वाणी अत्यन्त ही प्रिय तथा श्रेष्ठता को प्राप्त रहेगी तथा नाना प्रकार के शास्त्रों के ज्ञान से आप सुसम्पन्न रहेंगी। आपका सामाजिक जनों से कोमल तथा मधुर व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त सर्वप्रकार के सुखों का आप अपने जीवन में प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी ।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप देवताओं तथा ब्राहमणों को मन से सम्मान प्रदान करेंगी एवं समय समय पर इनकी पूजा एवं सेवा करती रहेंगी। लेकिन आपकी प्रवृति अभिमान से युक्त रहेगी तथा इसका समय समय पर प्रदर्शन करेंगी। आपके मन में दया तथा करूणा का भाव भी पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा। आप शरीर से स्वस्थ तथा बलवान होंगी एवं कई कलाओं के विषय में भी आप ज्ञानार्जन करके उसमें विशेष योग्यता प्राप्त करेंगी। आपका शरीर कान्तिमय होगा एवं बुद्धि भी तीव्र रहेगी। इसके अतिरिक्त आपके द्वारा बहुत से लोग सुखानुभूति प्राप्त करेंगे ।

जीवन में धनैश्वर्य एवं मान सम्मान का आप कभी भी अभाव नहीं समझेंगी। आपकी आखें भी विशाल तथा शरीर का वर्ण गौर वर्ण से सुशोभित रहेगा। निशाने बाजी में आप अत्यन्त ही निपुणता को प्राप्त होंगी। इसके अतिरिक्त आपका अपने नगर या समाज में पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रहेगा तथा वे लोग आपके पूर्ण रूप से वश में होंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में पैदा होने के कारण आप पुरूष वर्ग की अत्यन्त आदरणीय रहेंगी तथा इनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान को प्राप्त करेंगी। आपका चित्त हमेशा उत्साह से सम्पन्न रहेगा तथा आपके समस्त कार्य उत्साह पूर्वक सम्पन्न एवं सिद्ध होंगे। वाद विवाद में आपको कोई भी पराजित नहीं कर सकेगा इसमें आप हमेशा विजयी रहेगी।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए भाद्रपद मास पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां,श्रवण नक्षत्र,शुभयोग, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दाता होंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, कौलवकरण तथा शुभयोग में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ तथा अन्य शुभकार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक चिन्ता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में बाधायें उत्पन्न हो रही हो या शुभ एवं

महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिल रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरित वस्त्र, मूंग की दाल इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य शुभकार्यों में सफलता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य आचार्य से कम से कम 17000 जप करवाने से भी अशुभ फलों के प्रभाव में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों के प्रभावों में वृद्धि होगी साथ ही लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।